अध्ययन मार्गदर्शिका  
पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता  
मॉड्यूल चार – उसने हमें भविष्यद्वक्ता दिए – भाग 4

दिशानिर्देश : प्रत्येक अध्ययन मार्गदर्शिका को समय संकेतों के साथ खंडों में विभाजित किया गया है जो प्रत्येक मॉड्यूल में शामिल मुख्य श्रेणियों के अनुरूप हैं। अनुभागों में दो मुख्य घटक पाए जाते हैं : **नोट्स लेने की रूपरेखा** और **पुनर्समीक्षा के प्रश्न।** आपको वीडियो व्याख्यान देखते समय **नोट्स लेने की रूपरेखा का उपयोग करना है** और फिर मॉड्यूल प्रश्नोत्तरी की तैयारी के लिए **पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर देना है।** अध्ययन मार्गदर्शिकाओं का उपयोग करने के सर्वोत्तम तरीकों के बारे में अधिक जानकारी के लिए छात्र दिशानिर्देश नियमावली को देखें। साथ ही, अध्ययन मार्गदर्शिकाओं को सेव करना सुनिश्चित करें क्योंकि वे इस पाठ्यक्रम की अंतिम परीक्षा की तैयारी के लिए एक उत्कृष्ट संसाधन होंगी।

**ध्यान दें :** इस मॉड्यूल में “उसने हमें भविष्यद्वक्ता दिए” से दो वीडियो अध्ययन शामिल हैं : “भविष्यवाणियों का उद्देश्य और युगांतशास्त्र का विकास”

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

भविष्यवाणियों का उद्देश्य के अध्याय पर नोट्स लेने की रूपरेखा मिनट 0:00 — 46:35

1. परिचय
2. ईश्वरीय सर्वोच्चता
   1. परमेश्वर का अपरिवर्तित होना
      1. परमेश्वर का चरित्र
      2. वाचाई प्रतिज्ञाएँ
      3. अनंत सम्मति
   2. परमेश्वर का विधान
3. भविष्यवाणियाँ और मानवीय संभावनाएँ
   1. सामान्य प्रारूप
      1. अवलोकन
      2. स्पष्टीकरण
      3. विस्तार
   2. विशेष उदाहरण
      1. शमायाह की भविष्यवाणी
      2. योना की भविष्यवाणी
4. भविष्यवाणियों की निश्चितता

A. सशर्त भविष्यवाणियाँ

* 1. अनाधिकृत भविष्यवाणियाँ
  2. अभिपुष्ट भविष्यवाणियाँ
     1. शब्द
     2. चिह्न
  3. शपथपूर्ण भविष्यवाणियाँ

1. भविष्यवाणियों के लक्ष्य
   1. प्रचलित दृष्टिकोण
   2. सही दृष्टिकोण
      1. “क्या जाने?” प्रतिक्रिया
      2. द्विरूपीय प्रतिक्रिया
2. उपसंहार

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. जब हम कहते हैं कि परमेश्वर अपरिवर्तनीय है तो हमारा क्या अर्थ है?
2. इसका क्या अर्थ है जब हम कहते हैं कि परमेश्वर अपने ईश्वरीय विधान के द्वारा सृष्टि को संचालित करता है?
3. परमेश्‍वर द्वितीयक कारणों या सृजित कारणों के साथ किस प्रकार बातचीत करता है?
4. भविष्यवाणियाँ किस प्रकार ऐतिहासिक मानवीय संभावनाओं के द्वारा प्रभावित होती हैं?
5. डॉ. प्रैट के अनुसार, यिर्मयाह 18 की प्रतीकात्मकता का क्या अर्थ था, जहाँ कुम्हार मिट्टी के लोंदे पर कार्य कर रहा था, तथा उसे अपनी इच्छानुसार आकार दे रहा था?
6. शमायाह और योना के उदाहरण भविष्यवाणियों और ऐतिहासिक मानवीय संभावनाओं के बीच संबंध के बारे में क्या बताते हैं?
7. उन चार रणनीतियों का वर्णन कीजिए जिनका इस्तेमाल भविष्यवाणियाँ उन्हें पूरा करने के परमेश्वर की दृढता के स्तर को बताने में करती हैं?
8. पुराने नियम की भविष्यवाणियों के उद्देश्य के भ्रांतिपूर्ण प्रचलित दृष्टिकोण कौनसे हैं?
9. पुराने नियम की भविष्यवाणियों का क्या उद्देश्य था?
10. “क्या जाने?” प्रतिक्रिया का महत्व क्या है?
11. पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने अपने मूल श्रोताओं में कैसी प्रतिक्रियाओं को प्रेरित करने की आशा की थी?

युगांतशास्त्र का विकास के अध्याय पर नोट्स लेने की रूपरेखा मिनट 0:00 — 45:09

1. परिचय
2. मूसा का युगांतशास्त्र
   1. वाचाई चक्र
   2. वाचाई पराकाष्ठा
3. आरंभिक भविष्यद्वक्ताओं का युगांतशास्त्र
   1. मूसा के साथ समानताएँ
   2. मूसा के अतिरिक्त बातें
      1. राजतंत्र
      2. मंदिर
      3. गैरयहूदी
4. बाद के भविष्यद्वक्ताओं का युगांतशास्त्र
   1. यिर्मयाह की अपेक्षा
   2. दानिय्येल की अन्तर्दृष्टि
   3. अंतिम दृष्टिकोण
      1. आरंभिक आशाएँ
      2. अंतिम आशाएँ
5. नए नियम का युगांतशास्त्र
   1. शब्द
      1. सुसमाचार
      2. राज्य
      3. बाद के दिन
   2. संरचना
      1. यूहन्ना बपतिस्मादाता
      2. यीशु
   3. विषय
      1. निर्वासन
      2. पुनर्स्थापना
6. उपसंहार

**पुनर्समीक्षा के प्रश्न**

1. आशीष और शाप के उन चक्रों का वर्णन कीजिए जिसे मूसा ने परमेश्वर के लोगों के लिए पहले से ही देखा।
2. मूसा के उस दृष्टिकोण का वर्णन कीजिए जिसमें वाचाई जीवन के तीन चरण परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों के लिए अंत में बड़ी आशीषों में पूर्ण होंगे।
3. किन रूपों में आरंभिक भविष्यद्वक्ताओं का युगांतशास्त्र मूसा के युगांतशास्त्र के समान था?
4. किन रूपों में आरंभिक भविष्यद्वक्ताओं ने मूसा के युगांतशास्त्र में और बातों को भी जोड़ा?
5. निर्वासन की अवधि के विषय में यिर्मयाह की आशा क्या थी, और यह किस प्रकार पूरी हुई?
6. निर्वासन और पुनर्स्थापना के विषय में दानिय्येल ने क्या भविष्यवाणिय अंतर्दृष्टि प्रदान की?
7. पुनर्स्थापना के समय में बाद के भविष्यवाणिय युगांतशास्त्र के अंतिम दृष्टिकोणों में आरंभिक और बाद की आशाएँ क्या थीं, और वे कैसे भिन्न थीं?
8. नए नियम के इन शब्दों “सुसमाचार,” “राज्य,” और “अंत के दिन” का संक्षेप में वर्णन कीजिए, और स्पष्ट कीजिए कि वे परस्पर कैसे संबंधित हैं।
9. नए नियम के युग में राज्य की पुनर्स्थापना के तीन चरणों का वर्णन कीजिए।
10. राज्य के तीन चरणों में नया नियम निर्वासन के विषय को कैसे देखता है?
11. राज्य के तीन चरणों में नया नियम पुनर्स्थापना के विषय को कैसे देखता है?